तित्थयर

जैन भवन

733
Received
3/12/99

वर्ष : २३ अंक : ८
नवम्बर १९९९

ज्ञानी होने का सार यह है कि वह किसी भी प्राणी की हिंसा न करे।

Sethia Oil Industries Ltd.

Manufacturers of De-oiled Rice Bran, Mustard Deoiled Cakes, Neem deoiled Powder, Ground-nut De-oiled Cakes, Mahua deoiled cakes etc. And Solvent Extracted Rice Bran Oil, Neem Oil, Mustard Oil etc.

Plant
Post Box No. 5
Lucknow Road
Sitapur - 261001 (U.P.)
Ph: 42017/42397/42073
(05862)
Gram - Sethia - Sitapur
Fax : 42790 (05862)

Registered Office
143, Cotton Street
Cal-700 007
Ph: 2384329/
8471/5738
Gram - Sethia Meal

Executive Office
2, India Exchange Place
Calcutta - 700 001
Ph: 2201001/9146/5055
Telex : 217149 SOIN IN
FAX : 2200248 (033)

तित्थयर

श्रमण संस्कृति मूलक मासिक पत्रिका

जैन भवन

कलकत्ता

वर्ष - २३ अंक - ८, नवम्बर १९९९

संपादन

लता बोथरा

लेख, पुस्तक समीक्षा तथा पत्रिका से सम्बन्धित पत्र व्यवहार के लिये
पता - **Editor : Tithayar,** P-25, Kalakar Street, Calcutta-700 007

विज्ञापन तथा सदस्यता के लिये कृपया सम्पर्क करें –
Secretary, Jain Bhawan, P-25, Kalakar Street, Calcutta-700 007
Subscription for one year : Rs. 55.00, US$ 20.00,
for three year : Rs. 160.00, US $ 60.00,
Life Membership : India : Rs. 1000.00, Foreign : US$ 160.00

Published by Lata Bothra on behalf of Jain Bhawan from
P-25, Kalakar Street, Calcutta-700 007 Phone: 238 2655 and Printed by her
at Arunima Printing Works, 81, Simla Street
Calcutta-700 006 Phone: 241 1006

अनुक्रमणिका

क्र. सं. लेख	लेखक	पृ. सं.
धातुमय जैन प्रतिमाएँ	श्री भँवरलाल नाहटा	३६
श्रावक के दैनिक कृत्य		४६
मलया सुन्दरी चरित्र		५७

आवरण चित्र–**श्री अष्टापद (कैलाश)**

Composed by :
Aupriya Printers, 6A, Baroda Thakur Lane, Calcutta-700 007, Ph. 232 6083

सत्पुरुष दूसरों का दोष देखकर उसको प्रकट नहीं करते, प्रत्युत् लोक निन्दा के भय से उनके दोषों को अपने दोषों के समान छिपाते हैं। दूसरे का दोष देख कर वे स्वयं लज्जित हो जाते है।

भगवती आराधना (३७२)

जो व्यक्ति चारित्र गुण से रहित है,
वह बहुत से शास्त्र पढ़ लेने पर भी,
संसार समुद्र में डूब जाता है।

आवश्यक निर्युक्ति (६७)

धातुमय जैन प्रतिमाएँ

श्री भँवरलाल नाहटा

जीवन्त स्वामी - यह प्रतिमा भी भगवान महावीर के जीवनकाल में बनी प्रतिमाओं के अनुधावन में बनायी जाने वाली प्राचीन और कलापूर्ण गुप्त कालीन प्रतिमा है। जीवन्त स्वामी की इस प्रतिमा के दोनों हाथ खंडित है।

जीवन्त स्वामी - यह प्रतिमा एक प्रभिलेख युक्त ऊँचे पाद पीठ पर खग्डासन ध्यानावस्थित है। इसके आसन पर खुदे लेख से विदित होता है कि चन्द्र कुल की नागीश्वरी श्राविका का यह देव निमित्त दान है। इसकी लिपि ई. स. ५५. के आस पास की है। इस प्रतिमा के मुकुट - कुण्डल, बांये हाथ में ऊँचे भुजबंद व कलाई पर वलय पहना हुआ है, दाहिना हाथ सर्वथा लुप्त है, कटि मेखला धोती के ऊपर धारण की हुई है, मुखमंडल के पृष्ठ भाग में सूपाकृति किनारीदार प्रभा मंडल बना हुआ है, इनका मुकुट त्रिकुट हैं और पहले वाली प्रतिमाओं की भांति चौरस टोपी जैसा आकार नही है धोती की लोग मध्य में गोमूत्रि का कृति वाली है।

ऋषभदेव प्रतिमा - यह प्रतिमा कायोत्सर्ग - खग्डासन मुद्रा में अवस्थित है। इस २५ से. मी. ऊँची प्रतिमा के नीचे ३३ X ९ से. मी. परिमाण का पादपीठ है जिसके उभय पक्ष में निकली हुई नाल युक्त कमल पर दाहिनी ओर वक्ष एवं बांए तरफ अंबिका देवी विराजमान है। देवी के बाएं गोड़े पर बालक बैठा हुआ है। इस अलंकृत आसन के मध्य में उलटे हुए कमल का गोल आसन है जिस पर धर्म चक्र के अभय पक्ष में बैठे सुन्दर मृग प्रभु मुख को निहार रहे है। प्रतिमा के आकार और रिक्त स्थल में बने छिद्रो को देखने से प्रतीत होता है कि यह चतुर्विंशति जिन पट्टक रहा होगा जिस की तेईस प्रतिमाओं से युक्त परिकर बिछुड़कर

अलग हो गया है। इस पर निवृति कुल के जिनभद्र वाचनाचार्य के नाम का अभिलेख है। लेख की लिपि देखते श्री उमाकांत शाह ने इसे सुप्रसिद्ध श्वेः जैन विद्वान जिनभद्र गणिक्षमाश्रमण का और सन् ५५० के लगभग बतलाया है।

भगवान आदिनाथ - भगवान के बारीक धोती पहनाई हुई है और उस पर सुंदर डिजाइन बना हुआ है। आदिनाथ के प्रतिमा में सवस्त्र होते हुए भी नग्नत्व - पुरुष चिन्ह स्पष्ट परिलक्षित होता है। यह आश्चर्य जनक है। यह प्रतिमा बड़ौदा संग्रहालय में है।

अंबिका देवी - यह प्रतिमा छठी शताब्दी के उत्तरार्ध की लेटे हुए सिंह पर ललितासन में विराजमान अंबिका देवी की है। देवी के दाहिने गोड़े पर बालक बैठा है और दाहिनी ओर भी एक बालक खड़ा है। अलंकृत पीठ पर देवी और उसके पार्श्वदत्ता स्तंभ कमल पुष्पाकृति युक्त है और उसके बगल में ग्रास बने हुऐ हैं। स्तम्भों पर पट्टी के सहारे देवी विराजमान है और ऊपरी भाग में प्रभामंडल कमल पांखुड़ियों से युक्त है चारों ओर बेलपत्तियों का बार्डर है। इसके ऊपरी भाग में ध्यानस्थ जिन प्रतिमा बनी हुई है। देवी के विशाल ललाट पर मुकुट पर्याप्त ऊँचा और किरीट युक्त है। कानों में कुण्डल, गले में एकावलीहार, चंद्र कला हार व घंटिका - घुंघरू दार मंगल माला पहने हुए देवी के हाथों में भुजबंद सुशोभित है। इस प्रतिमा के पृष्ठ भाग में क्षतिग्रस्त अभिलेख उत्कीर्णित है। देवी की साड़ी धारीदार है और मुखमंडल पुष्ट और तेजस्विता पूर्ण है यह प्रतिमा भी बड़ौदा संग्रहालय में प्रदर्शित है।

पार्श्वनाथ त्रितीर्थी - यह कांस्य प्रतिमा आकोटा से प्राप्त अखंड, सुन्दर और बड़ौदा संग्रहालय में विद्यमान ६८ प्रतिमाओं में से एक है। इस की कला शैली में परिकर निर्माण का परिष्कृत रूप स्पष्ट दृष्टिगोचर होता है। पिंडवाला की प्रतिमा शैली से इसकी तुलना की जा सकती है। सप्तफण मंडित पार्श्वनाथ भगवान् की भव्य प्रतिमा के उभय पक्ष में दो काउसिग्गए ध्यानस्थ खड़े हैं उनके फूलदार धोती पहनी हुई है। उनके बगल में नीचे आसन पर दो चामर धारिणी अवस्थित है। तीनों जिन प्रतिमाओं के मस्तक पर छत्र सुशोभित है। ऊपरि भाग में एक देव ढोलक

लिए बैठा है और प्रभु के छत्रों के पीछे वृक्ष के पत्ते दिखाई देते है। नीचे अलंकृत पब्बासन और उल्टे कमलासन के नीचे वस्त्रासन लटक रहा है जिसके हरिण युगल युक्त धर्मचक्र है। सिंहासन के नीचे दो सिंह परिलक्षित है और उसके उभयपक्ष में दाहिनी ओर यक्ष व बाएं तरफ अंबिका देवी विराजमान है। इनके आगे नौ ग्रहों की मूर्तियां स्पष्ट हैं। मध्य दाहिने कोने में चैत्यवंदन मुद्रा में श्रावक बैठा दिखलाया है। प्रतिमा कलापूर्ण व सुन्दर है।

चतुर्विंशति पट्ट - यह कांस्य मय चौवीसी भी बड़ौदा संग्रहालय में प्रदर्शित है। मध्यवर्ती ऋषभदेव भगवान काउसग्ग खग्डासन में अवस्थित हैं। अवशिष्ट तेईस तीर्थंकर पद्मासन मुद्रा में विराजमान है। ऋषभदेव प्रतिमा के नीचे कमलासन और तत्रित्र भाग में धर्म चक्र, हरिण युगल और उभय पक्ष में नवग्रह बने हुए हैं। बगल में दोनों ओर निकली हुई शाखा भी कमल नाज पर दाहिनी ओर यक्ष व बांये तरफ अंबिका देवी विराजमान है।

चामर धारिणी - यह कांस्य मूर्ति अत्यन्त सुंदर लचकदार देह यष्टि युक्त है। इसके केश विन्यास और तदुपरि बंधी लड़े व ऊपर बंधे जूड़े के चतुर्दिक अलंकार धारण किया हुआ है। इसके गले में हार व पुष्ट पयोधरों के मध्य लटकती हुई मंगलमाला नाभि से दाहिनी ओर स्थित है। हाथों में भुजबंद पहने है। दाहिने हाथ में उतरीय वस्त्र का छोर पकड़ा हुआ है और सीधा किया हुआ है। दाहिना हाथ मोड़कर ऊपर किया हुआ है जिसमें दंड धारण किया हुआ लगता है, संभव है यह चामर की डांडी हो। कन्दौला दृढ़ श्रृंखला युक्त और तन्निम्त भाग में कटिमेखला - कटिपट्ट परिधापित है यह पश्चिम भारत की श्रेष्ठतम कला कृति है और बड़ौदा संग्रहालय में है।

अकोटा की ६८ प्रतिमा समूह में अवस्थित प्रतिमाओं में ३० अभिलेख युक्त है जिनमें दो में संवतोल्लेख है। लगभग इनमें आधी प्रतिमाएं सातवीं शताब्दी से पूर्व की है। दो कांस्य प्रतिमाओं के मस्तक बड़े ही सौम्य और कलापूर्ण है। ये अवश्य ही गुप्तकालीन प्रतिमाओं के खंडित भाग है।

वलभी (वला) - गुजरात का वल्लभी नगर जैन धर्म का मुख्य केंद्र रहा है जहाँ आर्य नागार्जुन की अध्यक्षता में प्रथम वाचना हुई। आचार्य मल्लवादी ने वि. सं. ४१४ के लगभग बौद्धों को शास्त्रार्थ में पराजित किया। वि. सं. ५१० में फिर श्री देवर्द्धिगणि क्षमा - श्रमण के नेतृत्व में जैन श्रमणों की परिषद का द्वितीय सम्मेलन हुआ जिसमें जैनागमों को पुस्तकारूढ़ किया गया। इस समय जैन धर्म गुजरात में सर्वत्र फैल चुका था। भंडारकर साहब ने वल्लभी से ५ खग्डासन मुद्रा की प्रतिमाएं प्राप्त की जो इस समय प्रिंस ऑफवेल्स म्यूजियम बंबई में है। इनके खंडित अभिलेखों से प्रमाणित हुआ है कि ये छठी शताब्दी में निर्मित हुई थी।

इन पॉचों प्रतिमाओं में चार पादपीठ पर स्थित है। जिसमें तीन का ऊँचा और एक प्रतिमा का पाद पीठ नीचा है। एक प्रतिमा का पाद - पीठ सर्वथा लुप्त हो गया है। ये सभी प्रतिमाएं गुप्तकालीन प्रतिमाओं की भांति प्रलम्बन होकर पश्चिम भारत की तत्कालीन शैली के अनुरूप है। एक प्रतिमा का दाहिना हाथ खंडित है। जो पाद पीठ पर मणिमाला के गोल घेरे में अवस्थित है। एक प्रतिमा के दोनों ओर पाद पीठ से लेकर मुख मंडल के पीछे बने प्रभामंडल तक धनुषाकार पट्टिका बनी हुई है। सभी के मस्तक पर घुंघराले बाल और लम्बे कान दृष्टिगोचर होते है। सभी प्रतिमाओं के धोती पहनी हुई है और गोमूत्रिका लहर की चुन्नटदार लांग नीचे लटक रही है।

मुहड़ी की जैन प्रतिमाएँ - मुहड़ी गांव गुजरात में खुदाई से प्राप्त प्रतिमाएं धातु की इकतीर्थी हैं।

१. जिन प्रतिमा के सिंहासन में दो सिंह और मध्य में धर्मचक्र है, उभय पक्ष में हरिण व प्रभु के पृष्ठ भाग में दो स्तंभ पर तोरण प्रभामंडल हैं।

२. जिन प्रतिमा के पृष्ठ भाग में चौखट पर प्रभामंडल है, निम्न भाग में पब्बासन के नीचे सप्तग्रह की खड़ी मूर्तियां व दोनों ओर निकली शाखा पर यक्ष यक्षिणी है।

३. ऋषभ देव प्रतिमा में कंधे पर कुंतल राशि और पवासन के नीचे वस्त्र व दाहिनी ओर यक्ष के अतिरिक्त कुछ अवशेष नही है। प्रभु के पृष्ठ भाग में कुछ नही है।

४. **पार्श्वनाथ प्रतिमा** - ऊँचे पाये के सिंहासन पर नवग्रह तदुपरि

कुंडली मारे सांप पर प्रभु प्रतिमा के उभय पक्ष में धरणेन्द्र पद्मावती है। प्रभु की सुंदर प्रतिमा पर सुंदर सप्तफण सुशोभित है।

पिण्डवाड़ा की प्रतिमाएं

१. **खग्डासन जिन प्रतिमा** - यह खड़ी प्रतिमा कमलासन पर स्थित है। प्रभु के धोती और कंदोरे का भाग खूब स्पष्ट व कलापूर्ण है। इस पर स. ७४४ का ५ पंक्ति संस्कृत अभिलेख है।

२. **खग्डासन आदिनाथ** - यह प्रतिमा भी ठीक उपर्युक्त प्रतिमा जैसी है केवल कंधे पर केश राशि का अंतर है।

३ **पार्श्वनाथ त्रितीर्थी** - यह प्रतिमा भी अति सुंदर पद्मासन स्थित सप्तफण मंडित है। उभय पक्ष में कक्ष है। काउसग्ग मुद्रा की खड़ी जिन प्रतिमाएं है जो उपर्युक्त प्रतिमाओं की भांति धोती पहने हैं। भगवान पार्श्वनाथ के पब्बासन के नीचे कमल की पांखुड़िया व नीचे कलापूर्ण वस्त्र है, वस्त्र के नीचे धर्म चक्र व उसके उभय पक्ष में हरिण है। दोनों ओर सिंहासन के सिर उत्कीर्णित है। उनमें दाहिनी ओर यक्ष है जिसके नीचे गज वाहन और बांए हाथ में फल धारण किया हुआ है। सिंहासन के वाम पार्श्व स्थित सिंह वाहिनी अंबिका मूर्ति के दाहिने हाथ में आम्रलुंब व बांये हाथ में बालक धारण किये हुए है। यक्ष यक्षी के पृष्ठ भाग में दोनों ओर चामर धारिणी स्त्रियां खड़ी हैं और निम्न भाग में नवग्रह प्रतिमाएं बनी हुई हैं। यह प्रतिमा आठवीं शताब्दी की है और अत्यन्त सुंदर कला कृति युक्त है।

वसन्त गढ़ से कितनी ही धातु प्रतिमाएं निकली थीं जिनमें दो विशाल प्रतिमाएं पींडवाड़ा के मंदिर में विराजित है उन पर सं. ७४४ वि. का लेख है।

वाकानेर की पार्श्व प्रतिमा -लगभग पिण्डवाड़ा की उपर्युक्त प्रतिमा से मिलती जुलती ही पार्श्वनाथ प्रतिमा सौराष्ट्र के वांकानेर में है। शैली एक होने पर भी शिल्पी भिन्न होने से थोड़ा से थोड़ा अंतर स्वाभाविक है यह प्रतिमा भी आठवीं नौवी शतीकी है और नीचे बनें पात्रों पर अवस्थित है।

दिल्ली की पार्श्वनाथ प्रतिमा - उपर्युक्त प्रतिमा की शैली में बनी हुई दिल्ली के चिराखाने के पार्श्वनाथ जिनालय में एक प्रतिमा अत्यन्त सुंदर और कलापूर्ण है। इस प्रतिमा के पृष्ठ भाग के एक अभिलेख भी खुदा है जिससे यह

प्रतिमा आठवीं नौवीं शती की प्रतीत होती है। उत्तर गुप्त कालीन कला का प्रतिनिधित्व करने वाली सुंदर तक्षण शैली आज की सी बनी हुई प्रतीत होती है।

महावीर स्वामी - यद्यपि यह प्रतिमा सं. १६०५ की बनी हुई और सम्मेत शिखर महातीर्थ में खरतरगच्छाचार्यो द्वारा प्रतिष्ठित है। इसकी शैलीगत विशेषता है चतुष्कोण समवसरण के आसन पर भ. महावीर विराजमान है। उनके चारों कोणों में सिंह खड़े हुए हैं, इन चारों कोनों में चार प्रतिमाएं गणधरों की खड़ी हुई भगवान को वंदन कर रही हैं। और उनके पृष्ठ भाग में व्यक्त; मंडित मौर्यपुत्र और अंकपित नाम खुदे हुए है।

प्रभास पाटण - १. आदिनाथ काउसग्ग मुद्रा की प्रतिमा प्रभास पाटण के सुविधिनाथ जिनालय में है जो किसी विशाल परिकर के बामू की प्रतीत होती है। इसके निम्न भाग में दाहिनी ओर चार भुजा वाली चक्रेश्वरी और वाम पार्श्व में अंबिका की खड़ी प्रतिमा है जिसके दाहिने हाथ में आम्र लुंब और वाम हाथ से बालक को गोद में लिए खड़ी हैं अंबिका की प्रतिमा पूर्व काल में नेमिनाथ भगवान की अधिष्ठात् होते हुए भी हर तीर्थंकर की प्रतिमा में पाई जाती है। खड़ी प्रतिमाएं यद्यपि कम मिलती हैं फिर भी बंगाल के शिल्प में देखी जाती हैं। चक्रेश्वरी की प्रतिमा के हाथों में चक्र एवं तीसरे में माला व चौथे में शंख धारण किया हुआ है, नीचे गरूड़ का वाहन है जो कमल पुष्प पर अवस्थित है।

अंबिका देवी की धातु प्रतिमा सं. १५०६ की प्रतिष्ठित है।

साराभाई के संग्रह - पार्श्वनाथ प्रतिमा सुंदर और सप्तफण मंडित है। इसमें भी उभय पक्ष में खड़ी हुई कार्योत्सर्ग मुद्रा की प्रतिमाएं है तन्निम्त भाग में चामर धारिणी व उभय पक्ष में यक्ष यक्षी अवस्थित है नीचे नव ग्रह बने हुए हैं व इसके धनुषावृति पाए के मध्य में धर्म चक्र है। प्रतिमा के पृष्ठ भाग में दसवीं शताब्दी का लेख उत्कीर्णित है जिसमें चंद्र कुल - भाढ गच्छ के गोचि श्रावक के द्वारा मुक्ति की इच्छा से जिनेश्वर त्रितीर्थी बनाने का उल्लेख है।

बंबई गौड़ी पार्श्वनाथ

१. गौड़ीजी के मंदिर की पार्श्वनाथ त्रितीर्थी भी सप्तफण मंडित है और उसी शैली में निर्मित है जो तीन शताब्दियों से चलती आ रही है। इसके नवग्रह

कुछ विशेष स्पष्ट है और सामने चारों पाए परिलक्षित है। पृष्ठ भाग में प्रतोली आकार वाले पाये पर सं. १०६३ का लेख उत्कीर्णित है। पिण्डवाड़ा की प्रतिमा शैली से कुछ भिन्नता और शिल्प में परिवर्तन व रेखाओं के उत्कीर्णन में कुछ न्यूनता लगती है।

२ **आदिनाथ प्रतिमा** - यह प्रतिमा प्रभास पाटण से आई हुई है। इसमें उभय पक्ष में चामर धारिणी मूर्तियां खड़ी हैं और दाहिनी ओर यक्ष व बाएं ओर अंबिका की प्रतिमा है। भगवान के पीछे प्रभा - मंडल, छत्रादि न होने से लगता है कि परिकर का भाग नष्ट हो गया है। इसके पृष्ठ भाग में सं. १०९०.का लेख उत्कीर्णित है। प्रभु के मस्तक पर पृष्ठ भाग में गर्दन तक लटकती केश राशि अन्य प्रतिमाओं से पृथकता ला देती है।

गिरनार तीर्थ - विमलनाथ परिकर - यह परिकर खुब विशाल और कलापूर्ण था। इसके ऊपर काउसग्गियें और परिकर के निम्न भाग में सं. १५२३ का लेख भी उत्कीर्णित है। इसे पहली ट्रेक के चतुर्दिग देहरियों के पास एक कमरे में रखा हुआ है इसमें पण्मुख यक्ष और विजया शासन देवी की सुंदर प्रतिमा बनी हुई है । प्रतिमा भग्न हो जाने से यह उपेक्षित परिकर पड़ा हुआ है।

दीव बन्दर - यहाँ के मंदिरों में लक्ष्मी देवी की दो धातु प्रतिमाएं हैं जो परिकर में विराजमान है। दोनों प्रतिमाओं के उभय पक्ष में गजराज अभिषेक करते दिखाए है। एक के पादपीठ में भी हाथी का वाहन दिखलाया है। एक प्रतिमा पद्मासन में और दूसरी दाहिना गोडा नीचे किए भद्रासन में विराजमान है।

पार्श्व यक्ष की प्रतिमा भी पादपीठ पर विराजित है। दोनों हाथों को खोले में रखकर बैठे हैं एवं उभय पक्ष में नाग दिखाए है।

अंबिका अलौरा की कांस्य मूर्ति खड़ी अंबिका पास में एक बालक खड़ा है। द्विस्तरीय सिंहासन पर गोल कमलासन है बालक नीचे बगल में खड़ा है।

ऋषभदेव खड़ी मूर्ति - मानभूम से प्राप्त कांस्य मूर्ति आशुतोष संग्रहालय में है। चौकी पर सामने बड़ा वृषभ है उस पर गोल कमलासन पर खड़ी प्रतिमा है कंधे पर केशावली व मस्तक पर जय किरीट - आजान बाहु प्रतिमा है।

झवारी - मंदिर की कांस्य जिनालय अनुकृति ११वीं शती की है। इसका शिखर चौरस है व चारों ओर चौमुख भगवान विराजमान करने का स्थान है।

परिकर - यह मूल प्रतिमा विहीन परिकर मांधाता (निषाई) से प्राप्त हुआ है। इसमें सं. १२४१ का अभिलेख है। इसमें विद्याद्यर, यक्ष और चामर धारी पुरूष बने हुए है।

सं. ११८८ की बनी एक शांतिनाथ प्रतिमा है।

बैकुण्ठम - यहाँ के जैन मंदिर में ७ खड़ी कांस्य मूर्तिया है जिनमें पार्श्वनाथ के शिखर सर्पफण है। इनमें घुंघराले बाल और उभरी हुई आंखे और मुख्य कृति में रूक्षता है।

बीकानेर की जैन प्रतिमाएं - म्यूजियम - बीकानेर से ७० मील दूरी पर अमर - कर के टीलों में सं० २०१३ में सोलह प्रतिमाएं निकली थी जिनमें १४ धातुमय प्रतिमाएं थी वे अभी म्यूजियम में प्रदर्शित है।

पार्श्वनाथ त्रितीर्थी - यह सप्तफण मंडित त्रितीर्थी परिकर युक्त प्रतिमा सं. ११०४ में प्रतिष्ठित है। भगवान के पृष्ठ भाग से आये हुए सांप का शरीर चौकड़ी युक्त है और फणावली के पीछे भी प्रतिहार्याकृति और शिखर पर छत्र है। उभय पक्ष में लम्ब गोला वृति चक्र के मध्य छत्र के नीचे कायोत्सर्ग मुद्रा में प्रतिमाएं हैं जिनके धोती के चिन्ह स्पष्ट है। छत्र के ऊपरी भाग में पत्ते दिखाई देते हैं। निम्न भाग में यक्ष यक्षी और दोनों ओर चामर धारी है जिनके पृष्ठ भाग में पत्ते की भांति तीखे आकार के आधार है। प्रभु के आसन के नीचे सिंह और दोनों तरफ पाये हैं, मध्य भाग में गुप्तोतर काल का वस्त्र लटकता हुआ है, नीचे नवग्रह हैं।

२. **त्रितीर्थी प्रतिमा** - यह संवत ११२७ की प्रतिष्ठित और उपकेश गच्छ के श्रावक आम्र देव कारित है। भगवान के पृष्ठ भाग में अलंकृत प्रभामंडल शिर पर छत्र और ऊपरि भाग में किन्नर हैं। उभय पक्ष की खग्डासन प्रतिमाएँ धोती पहनी हुई है और उनके पास चामरधारी खड़े है। काउसग्गियों के नीचे यक्ष यक्षी एवं तन्निमन भाग में नवग्रह है। सिंहासन के पायों के पास सिंह और बीच के वस्त्र चिन्ह के आगे धर्मचक्र है।

क्रमशः

श्रावक के दैनिक कृत्य

अब सिद्ध और आचार्य के मध्य कोण पंखडी में नमो दंसणस्स पद कह कर, मैं सम्यक दर्शन को नमस्कार करता हूँ अर्थ सहित जप करें। इस स्थान को तथा वर्णों को अति श्वेत मानना। आगे आचार्य और उपाध्याय के मध्य में नमो नाणस्स मैं सम्यक ज्ञान को नमस्कार करता हूँ कह कर ध्यान करना और सफेद वर्ण का प्रकाश देखना। अन्त में साधु और सिद्ध महाराज के मध्य कोण की पंखड़ी पर दृष्टि डाल कर नमो तवस्य मैं सम्यक तप को नमस्कार करता हूँ, कह सफेद प्रकाश नजर आने तक जप करो। पुनः यह स्मरण रहे कि ऊपर लिखे अनुसार जब तक उस मूर्ति और वर्णों के रंग का पूरा ध्यान न जमें तब तक वहीं ठहरना चाहिये। मन पर पूरा प्रभाव पड़ने के बाद दूसरे पद पर दृष्टि लगाओ। अर्हन्त भगवान् से जप आरम्भ करके तप तक मन स्थिर तथा शान्त रहे, स्मरण करते रहो। कम से कम दो घड़ी तक अवश्य ध्यान लगाना चाहिये। इस जाप से मन की शक्ति बढ़ती है। सन्तोष, धैर्य, शान्ति आदि उत्तम गुण उत्पन्न होते हैं। कर्मों की निर्जरा बहुत होती है। किसी कामना से करें तो वह भी पूरी हो जाती है। (यद्यपि ऐसा करना नहीं चाहिए)।

नये अभ्यास वालों के लिए

इस कमल के अनुसार मंत्र, ध्यान तथा वर्ण आदि कुछ आरम्भ में कष्टकारक प्रतीत होंगे। किन्तु थोड़ा - थोड़ा अभ्यास करते रहने से सब कुछ सरल हो जाता है। अभिलाषा के अनुसार प्रेम सब कुछ कर देता है परन्तु ऐसी तीव्र अभिलाषा होनी चाहिए। अथवा जिस तरह सुगमता से उत्तम ध्यान और परमेश्वर के गुणों में प्रीति बढ़े वैसा कर लेना चाहिए। किन्तु जप के साथ हृदय को एकाग्र करने का अभ्यास अवश्य बढ़ाना चाहिए। यह उत्तम प्रकार के जप की विधि है।

मध्यम प्रकार का जाप

माला को हाथ में लेकर मंत्र पढ़ना मध्यम प्रकार का जाप है। क्यों कि इसमें मन को वशीभूत करने के साधन थोड़े है। तथापि जो पद मुख में उच्चारण किया जावे उसके अर्थ पर ध्यान रखने से मन एकाग्र हो जाता है अर्थात् जप के बिना अन्य विचार करने से मन रुक जाता है। इस प्रकार के जप का फल भी उत्तम माना है। इस जाप को करने वाला अपने मन में विचारता रहे कि इससे मेरे अशुभ कर्मों का नाश होकर मेरा मन शुद्ध होता जा रहा है। मलिन वासनाओं के अनुसार मन में परिवर्तन होता हुआ अपने को ज्ञात होगा। मन में इस बात का निश्चय करलो, कि - मैं जितनी बार जिस समय परमात्मा का स्मरण करता हूं मेरे मलिन विचारों और कर्मों पर उतने ही हथौड़े पड़ते है। इससे कर्म निर्बल होकर बिखर जाते है। जितना भी निर्मल जप का बल बढ़ेगा उतने मलिन कर्म शक्ति हीन होते चले जावेंगे।

तीसरे प्रकार का (निंकृष्ट) जाप

मन की चपलता को रोके बिना जप करना निकृष्ट अर्थात् तीसरी. श्रेणी का जप है। जप करते समय साथ बातें भी करते रहें, मैं क्या बोल रहा हूँ इस बात का ध्यान न कर, अर्थ की ओर दृष्टि न डाल कर जप करना निकृष्ट श्रेणी का है। जैसे - बालक किसी के मुख से कोई बात सुन कर रटते रहते हैं इसी तरह वह नवकार मंत्र का जप भी हुआ। प्रायः अभ्यास होने से मंत्र भूल तो नहीं जाता, किन्तु मन कहीं और जगह पर लगा है। चित्त में और तरह के विचार उठ रहे हैं, इधर माला के दाने फिर रहे हैं। मालाओं की गिनती का भी साथ ध्यान रहता है तथा इतना चिर जप करना है इससे समय की ओर भी ध्यान बना है शीघ्रता से गिनती पूरी करने को दाने पर दाना गिराते चले जाना, निकृष्ट प्रकार का जाप किंचित फलदायक है। मार्ग में चलते समय भी यदि हो सके तो मन में जपते रहना चाहिए। इसमें जप की गिनती नहीं होती, तथापि यह निकृष्ट प्रकार का जप है इससे भी लाभ तो है ही। जब उत्तम प्रकार

के जप का समय मिले तो वही करना चाहिए, नहीं तो दूसरे अथवा तीसरे प्रकार का करना अवश्य चाहिए इसमें त्रुटि न हो। यह निश्चित बात है कि इन तीन प्रकार के जप में से जिसके लिये सुयोग प्राप्त हो करते रहना चाहिये उत्तम प्रकार के जप में जो नव विध जप कहा है उसके अर्हन्त और सिद्ध देव के स्थान पर, आचार्य, उपाध्याय और साधु गुरु पद पर तथा दर्शन, ज्ञान, चरित्र और तप चारों धर्म के स्वरुप माने गये हैं। इस जप में देव, गुरु और धर्म को नमस्कार किया जाता है। देव धर्म की प्रारम्भिक क्रिया बताने वाले हैं और गुरू महाराज देव के बताये हुए धर्म को सुनाते तथा स्वयं उसी धर्म की आराधना करके आदर्श जीवन हमारे सामने रखते हैं। ज्ञान, दर्शन, चरित्र,तथा तप आत्म - धर्म है। इनके आराधन करने से ही हमारा मनुष्य जन्म सफल है। इसलिये हम जाप करके शीघ्र आत्म - धर्म को प्राप्त कर सकते है। और नवपद के बदले यदि नवकार मंत्र का जाप किया जावे तो कोई हानि नहीं। जिस प्रकार जप भजन करते समय मन का हेरफेर कम होकर एकाग्रता बढ़ती जाती है और जो सांसारिक सुखोपभोग चाहते हैं मनको वे भी प्राप्त हो जाते है। जिस उद्देश्य से जप किया जावे, इसमें जितना चित्त एकाग्र होगा, उतनी ही सफलता मिलेगी। किन्तु शास्त्रकार कहते हैं, भोले जीव ! जरा सोच, लौकिक सुखोपभोंग तो अन्य प्रयत्नों द्वारा भी मिल सकते हैं, किन्तु ये चिर स्थाई नहीं होते तथा परिणाम भला नहीं होता। अन्त में दुःख दाई और नाशवान हैं और न इनसे सन्तोष ही होता है। ऐसा होते हुए इसके बदले उत्तम सुख देने वाले मार्ग को छोड़ कर जिसका परिणाम कष्टकारक है-जप न करना ही अच्छा है। किसी भी फल की अभिलाषा मन में न धार कर जो जप किया जाता है, उससे ही कर्म बन्धन रूपी मल आत्मा से उतरता है। इच्छा मन में रख कर जो जप किया जाता है, उससे शुभ वा अशुभ कर्मों का बन्धन बनेगा। जिसके कारण आत्मा निर्बल हो जावेगी।

जप करने के अनन्तर मन में विचार करें। मैं कौन हूं ? किस लिए मनुष्य देह मिली ? मेरा क्या कर्त्तव्य है? धर्म क्या है? मैने अपने कर्त्तव्य का कहां तक पालन किया है? मेरे पूर्व पुरुष कौन, कैसे थे? उन्होने क्या

क्या कार्य किये हैं? मैं इस योग्य हूँ या नहीं, मुझ में कितनी कमजोरी है? मैं कितना आलसी हूँ? क्या यह मेरे अपने दोष के कारण हैं? अथवा कोई अन्य बाधा? यह बाधा दूर भी हो सकती है? किन उपायों से दूर की जा सकती है? इनको दूर करने के लिए पहले यत्न क्यों न किया? किसी दूसरे की सहायता चाहिए? मैने कभी किसी का उपकार या सहायता की है अगर किया तो कर्तव्य जानकर, यदि नहीं किया तो बड़ी हीनता है। आगे को सावधान रहना होगा। व्यर्थ समय गवांने के लिए पश्चाताप करो। महापुरुषों के कार्यों के साथ अपनी अवस्था की तुलना करके अपने जीवन को वैसा ही शुद्ध बनाने का उद्योग करना चाहिए। उनका आचरण दर्पण सा है उसमें अपना मुख देख कर जो न्यूनता प्रतीत हो उसे पूरी करने का यत्न करो। यदि सम्भव हो तो भलाई करने में उनसे भी चार कदम आगे बढ़ने का निश्चय करलो। जो कुछ भी बुद्धि प्राप्त है उस उत्साह को किसी काम में लगादो। व्यर्थ नाश मत करो। पवित्र जीवन वाले पुरुषों के साथ अपनी अवस्था की तुलना करने से अपनी न्यूनता और अवगुण समझ में आ जाते है। उनके मार्ग पर हम चलने के योग्य हैं या नहीं। उसी मार्ग पर चलें अथवा कोई अन्य मार्ग ग्रहण करना चाहिये। उन्होंने अपनी बाधाओं को किस तरह दूर किया? इस तरह हमें भी सावधान रहना पड़ेगा। भावार्थ यह है कि महापुरुषों के चरित्र पर ध्यान देने से हमें इतना पता चल जाता है और हमें अपना मार्ग पूरा करने की चाबी हाथ लग जाती है।

फिर हमारे जीवन को हानि पहुँचाने वाले नशे, अफीम, तम्बाकू, अथवा कोई अन्य बुरा स्वभाव, किसी प्रकार के बुरे नाच रंगादि का व्यसन, जिनको आप सहज में छोड़ नहीं सकते शनैः शनैः कम करने का अभ्यास करें। जिन नशों का हमारे पर प्रभाव पड़ जाता है उनको एक बार ही छोड़ देना कठिन प्रतीत होता है। इनको छोड़ने के लिये, दिन, सप्ताह अथवा मास भर त्याग करने का नियम किया करों। इस प्रकार त्याग बढ़ते बढ़ते वह आदत छूट जावेगी, अथवा उसकी मात्रा कम करते रहने से भी यथोक्त लाभ हो सकता है। इस प्रकार बुराई को दूर करने का दृढ़ संकल्प करने से दोषों को भगाने की शक्ति बढ़ती है। जिस तरह

दोष हटाने की प्रवृत्ति बढ़ती जावे उसी प्रकार सद्‌गुण बढ़ाने के लिए भी शुभ यत्न करते रहना चाहिये। भले काम करने का कुछ नियम बांध लेना अच्छा है। पूजा पाठ, सामायिक माला जाप, परोपकार, ज्ञान - चर्चा आदि जितना बन सके करते रहना चाहिए। शुभ काम करने से अच्छे विचारों का ज्यों ज्यों अभ्यास बढ़ेगा, त्यों त्यों बुरे विचारों और कार्यों को धक्का लगने से बाहर निकलना पड़ेगा। बुराइंयों के दूर हो जाने पर किसी न किसी समय आत्मा अपने असली स्वरुप में प्रकट होंगा।

इससे प्रकट है कि अपनी उन्नति करने का कारण विचार शक्ति ही है। बिना विचार शक्ति के गडरिका प्रवाह चलने (भेड़चाल) से सुधार नहीं हो सकता। दोष कम नहीं होते, गुणों की बृद्धि नहीं होती, कर्तव्य अकर्त्तव्य का निर्णय भी विचार शक्ति के बिना नहीं हो सकता। आज तक हमें क्या लाभ अथवा हानि हुई यह बात भी विचार से ही जानी जाती है। प्रत्येक काम करने से पहले उसका उद्देश्य निश्चित कर लेना चाहिए। आज तक जो परिश्रम किया उसका परिणाम क्या निकला? उद्यम करने पर भी कोई लाभ नहीं हुआ तो सोचना चाहिए कि हमारा परिश्रम यथा रीति नहीं था। जिस काम के लिए उद्यम किया है यदि पूरा न हुआ तो किसी और तरह से उद्योग करना चाहिये। जैसे बीज बोने पर नहीं उगता तो समझना चाहिये कि बीज खराब था अथवा भूमि उपजाऊ नहीं। हमारे बोने के ढंग में कोई त्रुटि है क्यों कि यथा रीति किया हुआ परिश्रम निष्फल नहीं होता। जो परिश्रम हमने किया है वह ठीक है कि नहीं इस बात का विचार करना चाहिए।

कई बार ऐसा भी होता है कि शीघ्र फल की आकांक्षा करने वालों को तत्काल फल न मिलने से निराश होना पड़ता है। परन्तु इस प्रकार शीघ्र निराश नहीं होना चाहिए। प्रत्येक कार्य के लिए तथा बीज बोकर इसमें फल लगने के लिए कुछ समय चाहिए। यदि वह अवधि बीत जाए और फल प्राप्ति नहीं हो तो वृक्ष का निकलना आवश्यक है। बीज फूटकर कोंपले निकल आई हैं तो उचित समय तक फल की प्रतीक्षा करनी होगी। वृक्ष को देखकर दिल में ढ़ाढस रक्खो। इसी तरह शुभ कर्मों से यदि शुभ गुणों की शीघ्र प्राप्ति नहीं हुई तो भी ह्रदय में कुछ शान्ति,

नम्रता, आशा - तृष्णा के सुधार की भावना और कषाय घटें इत्यादि विचार रूपी वृक्ष तो अवश्य उत्पन्न होगा। इस तरह शुभ विचारों द्वारा कुछ समय व्यतीत करों। उत्तम विचारों द्वारा अपने जीवन का ध्यान करके दुर्गुणों को दूर करते जाओ। सद्‌गुण और भलाई करने का दृढ़ निश्चय करों। दिन भर ऐसे ही व्यवहार में बितादो। सायंकाल अपने दिन भर के किये कामों का पुनः विचार करों। तदन्तर आवश्यक करो। करने योग्य कर्म को आवश्यक कहते है। आज कल प्रायः प्रति - क्रमण को आवश्यक समझा जाता है। किन्तु आवश्यक ६ प्रकार का है। जिसमें ४ को प्रतिक्रमण कहते है। प्रतिक्रमण का भाव है पीछे हटना । किये हुए व्रत अथवा गृहस्थी के पालने योग्य नियमों को न पालना नियमों की नियत सीमा से बाहर चले जाना।

इन कमियों को ठीक करके फिर नियमानुसार कार्य करना अर्थात् व्रतों का पालन करना। लगे हुए अतिचार दोषों की छानबीन करके पीछे हटना इसी को प्रतिक्रमण कहते हैं। प्रतिक्रमण की भी बड़ी आवश्यकता इसीलिए है।

जिस तरह नदी अथवा समुद्र में चलते हुए जहाज में छिद्र हो जावे तो उसमें पानी भर कर डूबने का भय रहता है, जब तक कि उस छिद्र को भली भांति बन्द न किया जावे। ऐसे छिद्रों को सायं प्रातः देखना जहाजी का सबसे प्रथम कर्त्तव्य है। इसी तरह हमारे व्रत रूपी जहाज में दोष रूपी छिद्र न हो जावे। यह हर समय देखते रहना मनुष्य का कर्त्तव्य है। जो दोष दृष्टि में आवें उन्हें दूर करना चाहिए। प्रायश्चित आदि करके उस छिद्र को बन्द कर देना चाहिए। जिससे व्रत रूपी जहाज संसार समुद्र में भली प्रकार तैरता रहे, उसमें आसुरी पानी भर कर व्रत डूब जावेंगे। भाव यह कि ऐसा न करने से व्रतों के नाश का भय है। दिन में दो बार सायं प्रातः प्रतिक्रमण करने का भाव यह है कि जो अभी छोटासा छिद्र (दोष) हुआ है उसकी शीघ्र सुध लेने से वह सुगमतया बन्द हो सकेगा। यदि शीघ्र पता न लिया तो बड़ा हो जाने से बन्द करने में बड़ी कठिनाई का सामना करना पड़ेगा। इसी तरह यदि प्रति दिन एक दोष की ओर हमने ध्यान न किया तो स्वभाव का दोषी बन जाना सम्भव है।

जिस प्रकार जहाज में देर से पड़े हुए छिद्र को बन्द करना कठिन हो जाता है। ऐसे ही यदि व्रतों में दोष लगते रहे तो उनसे बचना असम्भव हो जावेगा। अतः आवश्यक है कि कोई भी दोष देर तक न लगता रहे उसको शीघ्र दूर कर देने का यत्न करना चाहिये। जिससे उसका हमारे पर कुछ प्रभाव न पड़ सके।

आवश्यक के ६ प्रकारों में पहले सामायिक आती है अर्थात् दो घड़ी तक समभाव (शान्ति) में रहने की प्रतिज्ञा की जाती है। अथवा जब तक आवश्यक क्रिया करनी हो, तब तक राग द्वेष रहित शान्ति की अवस्था में रहने की प्रतिज्ञा की जाती है। कम से कम दो घड़ी धर्म ध्यान क्रिया आवश्यक है, इसलिये यह दो घड़ी का मामूली नियम है। इससे अधिक देर तक रहने में भी कोई हानि नहीं। किसी विशेष समय इससे थोड़ा समय भी लगा सकते हैं, किन्तु दो घड़ी का विशेष नियम बांध दिया गया है।

इस सामायिक में परोपकारी कार्यों का त्याग करना लिखा है। मन, वचन और काया से इसका निरन्तर ध्यान रखना चाहिए कि मैं इस प्रतिज्ञा का नियमित रूप से पालन कर रहा हूँ अथवा नहीं। जब बुरे कर्मों का त्याग करते हैं तो मन शान्त हो जाता है। हृदय में शान्ति की लहर उठती है। भिन्न २ प्रकार के विचार दूर हो जाते हैं। यदि ऐसा न हो, राग द्वेष की तरंगे उठ रही हो, तो जान लेना चाहिए कि शान्ति की प्रतिज्ञा टूट रही है। प्रारम्भ में दो घड़ी से भी कम शान्त रहने का अभ्यास करना चाहिए। फिर इस अभ्यास को शनै : शनैः बढ़ाते जाओ। मन को अच्छे विचारों की तरह लगाओ। राग द्वेष के उत्पन्न होने का भय ही न रहे। उनको समय ही न मिले। आवश्यक क्रिया करते समय जो शब्द मुख से उच्चारण करो उनके अर्थ की ओर भी ध्यान रहने से बुरे विचारों को आने का मार्ग कम मिलता है।

शान्ति की प्रतिज्ञा पहला आवश्यक करने के उपरान्त दूसरा आवश्यक "चौवी सत्था" २४ तीर्थंकरों की स्तुति करने का है। इससे उनकी स्तुति नमस्कार किया जाता है। प्रारम्भ में शान्त रहने की प्रतिज्ञा के कारण मन पवित्र होता ही है तथा तीर्थंकरों की स्तुति और नमस्कार

स्मरण से और भी अधिक पवित्र हो जाता है, ध्यान में स्थिरता होती है।

तीसरे आवश्यक में गुरु महाराजों को नमस्कार करना लिखा है। इसको वन्दना कहते है। गुरु महाराज इस समय के हमारे परम उपकारी हैं। उनकी सुख शान्ति पूछ कर वन्दना नमस्कार करना बड़ा लाभदायक है। यदि किसी समय जान बूझ कर या अनजाने में कोई अपराध हो जावे तो उसके लिए क्षमा प्रार्थना करनी चाहिए। मन से पश्चाताप भी करे। इनके गुणों का अनुरागी बनने से तथा उनसे प्रेम करने से हृदय पवित्र होता है, यह गुरु वन्दना कहलाती है।

प्रतिक्रमण चौथा आवश्यक है। गृहस्थी के लिए जिन नियम व्रतादिकों का विधान है इनमें क्या दोष लगा है। दिन के समय में लगे हुए दोष सांयकाल के प्रतिक्रमण में स्मरण किये जाते हैं, तथा रात्री के जो दोष न बन पड़े ऐसा विचार करना चाहिए, और जिन्होने ग्रहस्थ धर्म सम्बन्धित बारह व्रत नहीं किये उन्होंने भी यदि अभक्ष्य भक्षण कर लिया, भगवान की शास्त्र आज्ञा में श्रद्धा नही की, अठारह पाप स्थानों का सेवन किया है इत्यादि सब स्मरण करके पश्चाताप तथा फिर न करने की प्रतिज्ञा करनी चाहिए इसका नाम प्रतिक्रमण है।

पांचवें आवश्यकता "काउसग्ग" (कार्योत्सर्ग) आता है। चौथे प्रतिक्रमण में जिन अपराधों का स्मरण करके क्षमा याचना से दूर नहीं हुए तो उनके निवारण के लिये प्रायश्चित ओर प्रायश्चित के लिए काउसग्ग किया जाता है। जिसमें ज्ञान दर्शन तथा चरित्र सम्बन्धी जो अतिचार लगे हों उन्हें दूर करने की भी शक्ति है अर्थात् मन, वचन, काया को एकस्थ करके जो ध्यान स्तुति की जाती है वह काउसग्ग नामक पांचवा आवश्यक है।

छठा आवश्यक पच्चक्खान करने में आता है। जो दोष लगे हुए काउसग्ग करने से भी दूर नहीं हुए हैं तो उसके हेतु उपवास आदि का प्रत्याख्यान करना चाहिए। जिससे वह लगा हुआ दोष दूर हो जावे। यदि कोई ऐसा दोष न भी लगा हो तो धर्म ध्यान में उन्नति करने के लिये अधिक योग नियम धारण करना, शुभ कार्यों की ओर अधिक विचार रखने के लिए पच्चक्खान करना, श्रेष्ठ है। अमुक दोष दूर करने की

प्रतिज्ञा करने, इच्छाओं को रोकने के लिये इनकी सीमा बाँध देनी चाहिए। जिस किसी तरह लाभदायक योग्य नियमों का पालन करना छठा आवश्यक है। इन छः आवश्यकों को प्रतिक्रमण कहते है। यह एक प्रकार से ठीक भी है। क्योंकि इनका भाव तो प्रतिक्रमण का ही है। इसलिये इसका नाम आवश्यक बहुत ठीक है।

यह प्रतिक्रमण जैसे दिन में सायं प्रातः दो बार होता है। इसी तरह पन्द्रह दिन, चार महीने, बारह महीने, पक्ष चतुर्मास तथा सम्वत्सरी में एक एक बार करने में आता है। यह अधिक शुद्धि कारक है. जैसे हम घर को प्रति दिन बुहारते हैं किन्तु हर बार दीपावली आदि के समय विशेष रूप से साफ करते है। साथ ही टूटी फूटी जगह को गाँठ कर सफेदी चूने का लेप भी करा लेते है। ऐसे ही इन प्रतिक्रमणों के लिये जान लेना चाहिये अथवा जो लोग सदा दिन में दो बार ऐसा नहीं कर सकते वे पक्ष , चतुर्मास अथवा साल के बाद ही एक बार कर लिया करें, तो भी कुछ न कुछ लाभ होंगा ही। जो दो बार दिन में प्रतिक्रमण करते है उनको उक्त पर्वों पर प्रतिक्रमण करने में बहुत लाभ है। जो लोग प्रति दिन घर को साफ नहीं करते, केवल दिन त्यौहार के समय ही साफ करते है उनको बहुत परिश्रम करना पड़ता है। इसके प्रतिकूल नित्य बुहारने वालों का घर त्यौहार के दिन बिना कष्ट के शीघ्र स्वच्छ हो जाता है, तथा सुन्दर प्रतीत होता है। दृढ़ता भी होती है। जो सदा साफ रखने की ओर ध्यान नहीं देते उनके घर मैले तथा किसी समय अचानक गिर भी जाते है। पुनः उनको बनाने में अधिक परिश्रम की आवश्यकता होती है। बड़े कष्ट उठाने पड़ते हैं। एवं जो मनुष्य प्रति दिन प्रतिक्रमण करते हैं। जिससे आत्मा निर्मल हो जाती है। पर्व के दिन ज्ञान ध्यान में उन्नति करते है। उनकी आत्मा अपने गुणों को प्रकट करती है।

जो पक्षिक, चतुर्मासी आदि प्रतिक्रमण करते हैं उनको भी कुछ न कुछ फल अवश्य मिलता है। आत्मा अधिक मलिन नहीं होती। कुछ व्रत पच्चक्खान बने रहते हैं किन्तु जो कभी भी नहीं करते, उनको दोष लगे रहते हैं वे अपने व्रतों से सर्वथा हीन हो जाते हैं। उनको फिर ऐसा समय मिलना

कठिन है क्योंकि बीता समय फिर कभी नहीं आता। यह प्रतिक्रमण का फल बताया गया है।

प्रतिक्रमण के इच्छुक

जिनको प्रतिक्रमण नहीं आता, किसी कारणवश सीख भी नहीं सकते, स्मरण शक्ति नहीं, अथवा प्रतिक्रमण करने की सुविधा न हो तो उनको नीचे लिखे अनुसार काम करने से बड़ा लाभ है। प्रथम - वह जितना समय स्थिर रह सके उतने समय के लिए समभाव अर्थात् शान्त चित्त रहने का नियम ले। दूसरे - तीर्थकरों की स्तुति करे। तीसरे - अपने गुरु महाराज को नमस्कार करे। चतुर्थ - अठारह पाप स्थानों का स्मरण न करके, दिन या रात्री के समय कोई दोष हो गया हो तो उसकी क्षमा मांगे। पंचम - इसके प्रायश्चित के लिये अपने इष्टदेव का स्मरण करे।

कुछ समय के लिए काउसग्ग ध्यान में रह कर नवकार मंत्र का जप करे। पांच, दस, बीस, लोगस का काउसग्ग। फिर दोष न लगने देने का निश्चय करके नियम ले और परमार्थ, पर - उपकार, अच्छा वर्ताव जिससे अपनी और दूसरों की भलाई हो। ऐसा दृढ़ निश्चय समय पर शान्त ह्रदय से करे, और साथ ही मन में यह भाव बनाए रखे कि वह दिन धन्य होगा जिस दिन मैं भी प्रतिक्रमण कर सकूँगा। ऐसा करने से भी ह्रदय शुद्ध होता रहेंगा।

इतनी क्रिया करने में यदि चैतन्य रहेंगे, तो आगे को इसमें उन्नति की सम्भावना है। यदि कोई कुछ भी न कर सके तो उसे यह क्रिया प्रातःकाल सायंकाल अवश्य करनी चाहिये। इससे कर्म की निर्जरा होती है। इससे आत्मा शुद्ध होती है जन्म मरण से रहित होकर मुक्ति को प्राप्त करती है।

प्रतिक्रमण अथवा कथित क्रिया धर्म स्थान उपाश्रय अथवा किसी एकान्त शुद्ध स्थान पर जहाँ किसी प्रकार की खटपट न हो, जाकर करनी चाहिए। यह सुविधा न मिले तो किसी शुद्ध स्थान पर बैठकर कर लेनी चाहिए। प्रतिक्रमण कर चुकने पर आदर्श महापुरुषों का स्मरण करें। गुणवान् मनुष्यों के जीवन चरित्र, उनके अनुपम गुण, उनका

कठिन ब्रह्मचर्यव्रत, घोर तपस्या समाधियोग, संसार उपकारी कार्य, हितकारी उपदेश तथा उच्च श्रेणी के गुणानुवाद कथन करने चाहिए। ऐसे गुणों की इच्छा रख कर उनके पदचिन्हों पर चलने की साधना करनी चाहिए। जितना अच्छे गुणों का स्मरण करोगे, उतनी ही अपनी आत्मा को उन्नत तथा शुद्ध बनाओगे। जैसा सहारा लोगे वैसे ही बन जाओगे। यद्यपि वैसे बनना इतना शीघ्र सम्भव नहीं तथापि विचार तो कुछ समय के लिये उनके से उन्नत हो सकेंगे। इतनी देर के लिए तो तुम उन्नत और पवित्र बन सकोगे।

क्रमशः

—0—

मलयासुन्दरी चरित्र

प्राचीन साहित्य में विशाल भारत - भूमि आर्य देश के नाम से प्रसिद्ध है। उसके दक्षिण देश में चन्द्रावती नगरी उसकी शोभा में और भी अधिक वृद्धि कर रही थी। इसी चन्द्रावती नगरी के पूर्ववर्ती विशालकाय महान् मलयाचल पर्वत अपने ससुगन्ध मन्द पवन से नगरी के लोगों को नित्य ही आनन्दित करता था। राजा के महल, धनाढय व्यापारियों के गगन चुम्बी मकान, जिनेश्वर देव के मन्दिर, और धर्माराधन करने के लिए पवित्र स्थान उस नगरी की मुख्य शोभा बढ़ा रहे थे। शहर के चारों तरफ सुन्दर किला था। शहर की दक्षिण दिशा में महान् विस्तार वाली गोला नदी कलकल निनाद करती हुई बह रही थी। शीतल और चमत्कारी तरगों से देखने वालों के मन को आनन्दित करती थी। नदी के किनारे का हरियाला प्रदेश शहर के चारों तरफ के बगीचे और छोटे छोटे सुन्दर पहाड़ों पर खड़े हुए वृक्षों के निकुंज ग्रीष्म ऋतु में प्रचण्ड आताप से मनुष्यों को शान्ति देने के लिये पर्याप्त थे। नगरी में व्यापार भी बहुत होता था इस कारण अनेक देश के व्यापारी चन्द्रावती नगरी में बने ही रहते थे। चन्द्रावती के आस पास का प्रदेश भी बहुत उपजाऊ था इसलिए उसके समीप चारों ओर अनेक ग्राम बसे हुऐ थे। जहां के निवासी कृषि और गौपालन करते थे। ग्रामों के साथ चन्द्रावती नगरी का वैसा ही अच्छा सम्बन्ध था जैसा सम्बन्ध नगर और ग्राम का होना चाहिये तथा जिस सम्बन्ध के होने पर दोनों जगह के निवासियों का जीवन सुख पूर्वक बीत सकता हैं। चन्द्रावती के नागरिक ग्रामों के प्रति अपने अपने उत्तरदायित्व को भली भांति समझते थे। वे जानते थे कि हमारा जीवन ग्रामों के आधार पर ही है। इससे वे ग्रामोन्नति में सदैव तत्पर रहते थे। इस कारण नागरिकों और ग्रामीणों दोनों ही का जीवन सुखपूर्वक बीतता

था। नगरी के लोग समृद्धिवान, बलवान, निरोगी, रूपवान विचारशील और धार्मिक होने से बहुत सुखी और शान्त थे।

इसी रमणीय चन्द्रावती नगरी का स्वामी क्षत्रीय वंशी महाराजा वीरधवल था। वीरधवल राजाओं के योग्य गुणों से विभूषित था। वह प्रजाप्रिय नरेश था। प्रजा वीरधवल के शासन से सुरक्षित थी। और सब तरह समृद्ध एवं राजभक्त थी। सब लोग प्रसन्नता पूर्वक वीरधवल की कुशल मनाया करते थे। वीरधवल भी प्रजाहित के कार्यों में सदा दत्तचित्त रहता था। प्रजा अपनी रक्षा के लिये वीरधवल का होना आवश्यक समझती थी।

राजा वीरधवल के चम्पकमाला तथा कनकवती नाम की दो रानियां थीं। महारानी चंपकमाला अति सुन्दर रूपलावण्य के उपरान्त शीलादि अलंकारों से सुशोभित थी। यही कारण है कि सारे राज कुटुम्ब पर उसने अपना महारानी पद का अद्वितीय प्रभाव जमा रखा था। इसीलिए महाराजा वीरधवल ने उसे पटरानी की पदवी से विभूषित किया था। कनकवती भी रूपलावण्य में कुछ कम नहीं थी। इसलिए वह भी महाराजा वीरधवल की प्रिय पत्नी थी। वीरधवल की उमर करीब ५० वर्ष की हो चुकी थी, फिर भी संसार वृक्ष के फल स्वरूप पुत्र या पुत्री कोई भी सन्तान की प्राप्ति नंहीं हुई थी।

एक दिन महाराजा वीरधवल अपने राजप्रसाद के ऊपरी दालान में बैठे हुए थे। संध्या का सुहावना समय था। वासरमणि सूर्य भगवान अपनी सुदूरवर्त्ती किरणों को समेट कर अपने निवास स्थान की ओर प्रस्थान कर रहे थे। दिन भर अथक परिश्रम करने वाली मनुष्य जाति भी अपने अपने घर पर आ कर विश्राँति में मग्न थी। पक्षीगण अपने अपने घोंसलों में जाकर शांति में लीन हो रहे थे। सृष्टिदेवी पर निस्तब्धता छाई हुई थी। आकाश मण्डल धुंधले रंग में प्रकाशहीन होकर अतीव शोभायमान दीख रहा था। राजमहल में भव्य द्वार पर प्रतिहारी रात्रि का आगमन होने के कारण सावधान हो संरक्षण की भावना से पहरा दे रहे थे। विशाल राजमहल के गगन चुम्बी शिखरों पर धीरे धीरे अन्धकार का साम्राज्य फैल रहा था। राजप्रसाद के समस्त कर्मचारी अपने अपने नियत कार्य

पर लग चुके थे। सृष्टिदेवी शान्त, स्निग्ध हृदय से निद्रा की आराधना कर रही थी।

जिसने असंख्य आशाओं की, अपरिमित लालसाओं की पूर्ति का समय अपनी आंखों से देख लिया है, जिसने राजैश्वर्यका दुष्प्राप्य सुख भोग लिया है, ऐसे महाराजा वीरधवल सभा विसर्जन कर रात्रि के समय में राजमहल के एक ऊपर के भाग में बैठे थे। सारी प्रजा उनके राजनियंत्रण की दयामय स्थिति से संतुष्ट थी। महाराजा वीरधवल जहां पर बैठे हुए थे वहां से नगरी का मनोरम दृश्य दीख रहा था।

ऐसे सुहावने समय में नीचे के द्वार पर किसी की आहट आई। समुद्र की लहरें शांत हो जाने पर जैसे समुद्र शान्त दीखता है उसी तरह राजमहल गंभीर शांतता में विलीन था। राजमहल के महाद्वार पर प्रतिहारियों के पास एक नवयुवक आकर खड़ा हुआ। युवक गठीले शरीर का आरोग्य संपन्न था। उसके चेहरे पर उत्साह और नवचैतन्य की उमंगें नाच रही थीं। उसकी बड़ी बड़ी आंखों में नवतेजोमय उत्साह झलक रहा था। उसके विस्तीर्ण ललाट पर पसीने के बिन्दु चमकते थे और आंखों में वीरता का उज्जवल पानी झलक रहा था। युवक ने प्रतिहारी को अत्यन्त विनीत भाव से प्रणाम किया और धीमे स्वर में कहा " मैं महाराजा से मुलाकात के लिए आया हूं " । बस! इतना ही कह कर वह युवक चुप हो गया।

"नहीं, इस समय आप राजमहल में नहीं जा सकेंगे।" द्वारपाल ने युवक के चेहरे को निहार कर उत्तर दिया। "आप से महाराजा का इस वक्त मिलना असंभव है। आप फिर कभी ..... " द्वारपाल की बात काट कर युवक ने अदम्य उत्साह से विनम्र भावयुत फिर कहा - नहीं, मुझे इसी वक्त महाराजा से मिलने की आवश्यकता है। आपसे कहने तक का भी समय नहीं, मुझे जल्दी ही जाने दो। आप किसी तरह की शंका न रक्खें। महाराज मुझे देखते ही नाराज होने के बदले प्रसन्न ही होंगे।

महाराजा वीरधवल शान्त चित्त से दीपकों के प्रकाश में राजनगर का सौन्दर्य निरीक्षण कर रहे थे। अस्तगामी सूर्य की अस्पष्ट लालिमा भी अब अदृश्य हो चुकी थी। चारों तरफ अन्धकार ने अपना अधिकार जमा लिया था।

महाराजा की नजर महाद्वार पर गई। द्वार पर खड़े युवक को देखते ही वे प्रसन्न हो गये। महाराजा ने प्रौढ़ और गम्भीर आवाज से पुकारा - "द्वारपाल!"

महाराज की पुकार सुनते ही हाथ जोड़ प्रणाम कर के द्वारपाल ने कहा - "आज्ञा सरकार " उन्हें हमारे पास भेज दो।" महाराजा वीरधवल का यह वाक्य पूरा भी न होने पाया था कि महाद्वार खोला गया, और अपने पीछे पीछे उस युवक को लेकर वह प्रतिहारी राजा के समीप आया, फिर तीन वक्त प्रणाम कर के द्वारपाल वहां से बाहर निकल गया। महाराजा ने उस युवक को देखकर विचार किया - इस वक्त संध्या समय मेरे पास आने वाले मनुष्य को अवश्य ही कोई महान् प्रयोजन होगा। राजा को चाहिये कि हर एक प्रजाजन के दुःख को हर समय सुनने के लिए तत्पर रहे और चाहे जिस प्रयत्न से प्रजा को दुःख से मुक्त करना चाहिए। बहुत से अधिकारी प्रजा के दुःख की उपेक्षा करते हैं, नियमित समय के सिवाय प्रजा जनों की फर्याद नहीं सुनते। इससे प्रजा को बहुत दफे कष्ट उठाना पड़ता है। इस प्रकार प्रजा की पुकार पर उपेक्षा करने वाला अधिकारी या राजा वास्तव में उस पद के योग्य ही नहीं होता। मुझे अपनी प्रजा की फर्याद हर वक्त सुननी चाहिये और शक्य प्रयत्नों द्वारा उसे सुखी करनी चाहिए। राजा प्रजा के सुख से सुखी, और दुःख से दुःखी होता है। प्रजा के सुख पर ही राजा के राजैश्वर्य का आधार है यह बात हमें हर वक्त याद रखनी चाहिए। प्रजा की यातनाभरी आह राजा को निर्वश और भिखारी बना देती है। इत्यादि विचारों में मग्न होते हुए महाराजा के सम्मुख आगन्तुक युवक आ उपस्थित हुआ। उसने महाराजा के सन्मुख उपहार रखकर विनीत भाव से गर्दन झुकाकर चरणों में नमस्कार किया।

कुछ समय तक महाराजा के साथ बातचीत करके उस युवक के जाने के बाद महाराजा वीरधवल के चेहरे पर उदासीन भाव ने अपना प्रभाव डाला। मुख पर चमकता हुआ राज तेज निस्तेज सा हो गया, उनके हृदय में चिंता ने स्थान जमा लिया और मुख से उंष्ण तथा दीर्घ निश्वास निकलने लगा। अर्थात महाराजा किसी गूढ़ चिंता के कारण शोक समुद्र में निमग्न हो गये। ठीक, उसी समय पर महारानी चंपकमाला

और द्वितीय रानी कनकवती महाराजा के पास आ पहुँची। दोनों रानियों के वहां आ जाने पर भी ध्यानमग्न योगी के समान चिंता में एकाग्र हुए महाराजा वीरधवल ने उनकी तरफ गर्दन उठा कर देखा तक भी नहीं। अपने प्रिय पति की ओर से हमेशा की तरह आज कुछ भी आदर मान न मिलने के कारण दोनों रानियां घबरा सी गईं। वे व्यग्र चित्त से विचारने लगीं कि आज महाराज की हम पर सदा के समान कृपादृष्टि न होने का क्या कारण है? क्या अज्ञानता में हमसे पति देव का कोई अपराध हुआ है? आज महाराज हमारी तरफ देखते भी नहीं। इस प्रकार के संकल्प विकल्प की उलझन में उलझी हुई वल्लभायें महाराजा के नजदीक आईं और द्रवित हृदय तथा नम्र वचन से पतिदेव को प्रार्थना करने लगीं। नाथ! क्या आज हम दासियों से अज्ञानता में आपका कोई अपराध हुआ है? आप इतने उदास क्यों हैं? थोड़ी देर पहले तो आप दिवानखाने के झरोखे में आनन्द से फिर रहे थे, और चंद्रावती नगरी की शोभा देख रहे थे। इतने थोड़े ही समय में आप इतने उदास क्यों बने? अगर यह बात इन अपनी सहचारणियों को मालूम करने लायक हो तो कृपा कर हमें भी अपने दुःख में शामिल करें।

अपनी प्रिय वल्लभाओं के शब्द कान में पड़ते ही महाराजा की विचार श्रेणी भंग हुई और वे प्रेमगर्भित शब्दों से बोले - प्रिय बल्लभाओं! आज मैं एक चिंता में निमग्न हो गया हूँ कि तुम्हारा आगमन भी मुझे मालुम न हुआ। परन्तु इस चिंता का कारण जुदा ही है और तुम्हें भी इसमें हिस्सा लेना होगा। अपने ही शहर में रहने वाले एक वणिक पुत्र गुणवर्मन ने अभी मेरे पास आकर अपने घर का जो इतिहास सुनाया है वही मेरी चिंता का कारण है। इतना कहकर महाराजा वीरधवल फिर शांत हो गये।

महारानी चंपकमाला हाथ जोड़ कर नम्रता से बोली महाराज ! आपकी चिंता का कारण हम सहचारिणियों को अवश्य सुनना चाहिए। हम आप के ही सुख से सुखी और दुःख से दुःखी होने वाली हैं। आपके कथनानुसार इस चिंता में हम खुशी से हिस्सा लेंगी।

प्रिया का अत्याधिक आग्रह देख महाराजा वीरधवल अपनी उदासीनता का कारण रूप गुणवर्मा द्वारा कहा हुआ सर्व वृतान्त सुनाने लगे

चिन्ता का कारण

प्रिय वल्लभाओ! हमारी इस चंद्रावती नगरी में लोभाकर और लोभानन्दी नामके दो वणिक रहते हैं। वे अपने नामानुसार ही गुणनिष्पन्न हैं। सहोदर होने के कारण उन दोनों भाइयों में परस्पर प्रेमभाव भी है। वे लोहे आदिका व्यापार करके धन उपार्जन करते हुए सुखसे दिन व्यतीत करते हैं। समय क्रमसे लोभाकरको गुणवर्मा नामक पुत्र हुआ। परन्तु अनेक स्त्रियों के साथ पाणिग्रहण करने पर भी लोभानंदी को कोई संतान न हुई। सचमुच पुत्र पुत्री आदि संतति रूप फल भी पुर्वोपार्जित शुभाशुभ कर्म बीजानुसार ही मिल सकता है।

एक दिन वे दोनों भाई दुकान पर बैठे थे। उस समय एक सुन्दर आकृति वाला अपरिचित युवक पुरूष वहाँ आया। सांसारिक व्यवहार में एवं अधिकतया वणिक कला में प्रवीण इन वणिकों ने उसकी आकृति से उसे धनवान समझ कर आसनादि देकर उसकी अच्छी भक्ति की। कितने एक़ दिनके बाद उन वणिकों की बनावटी प्रीति और भक्ति से विश्वास प्राप्त करनेवाले उस युवान पुरुष ने अपने पास रहा हुआ एक तूम्बा कुछ दिन के लिए धरोहर के तौर पर उन्हें सौंप दिया और खुद किसी एक गाँव को चला गया। उन्होंने उस तुम्बे को दुकान में किसी एक खूंटी पर लटका दिया। आताप की गर्मी से पिघले हुये रस के बिन्दु उस तूम्बे में से झर कर नीचे पड़ी हुई लोहे की एक खुदाली पर पड़े। वह लोह भेदक रस होनेके कारण वजनदार लोहे की खुदाली उस रस के स्पर्श मात्र से सुवर्णमय बन गई। यह देखकर उन बनियों ने अच्छी तरह समझ लिया कि इस तूंबे में सिद्धरस है। इस कारण उन लोभान्ध बणिकों ने रस सहित तूम्बेको किसी गुप्त स्थान में छिपा दिया।

अनेक दिनके बाद वह युवक वापिस चन्द्रावती में आया, और माने हुए प्रमाणिक उन बणिकों के पास से उसने अपना तूम्बा वापिस मांगा। उन दंभी व्यापारियों ने जबाव दिया कि आपका तूम्बा चूहों के डोरी काट देने के कारण नीचे पड़ कर फूट गया, और उसमें रहा हुआ रस तमाम जमीन पर बह गया! इस प्रकार जवाब देकर किसी अन्य तूंबे के टुकड़े

लाकर उसे दिखला दिये। टुकड़े देखते ही उस युवक पुरुष ने समझ लिया कि मेरे तूम्बे में रहे हुए लोह भेदक रसको इन्होंने किसी न किसी प्रकार जान लिया है। इसी कारण ये मेरे तूंबे को छिपाते हैं। युवक पुरुष बोला - सेठ! मेरा तूम्बा मुझे वापिस दे दो। आप न्यायवान् हैं, मैंने आपको प्रमाणिक और विश्वासपात्र समझ कर ही आपके पास रक्षण के लिए तूंबा रक्खा था। यदि आप मेरे साथ विश्वासघात करेंगे तो आपके लिये भी महान् अनर्थ होगा। मैं किसी तरह भी विश्वासघात का बदला लिये बिना न रहूँगा। इस प्रकार अनेक प्रकार से उन दोनों व्यापारियों को समझाया, परन्तु लोभ के बशीभूत हो; उन वणिकों ने उसके कथन की बिलकुल पर्वाह नहीं की। युवक ने सोचा कि अगर यह बात मैं राजा से जाकर कहूँ तो यह ऐसी वस्तु हैं कि इसे राजा खुद ले लेगा। क्योंकि लक्ष्मी को देखकर किसका मन नहीं ललचाता? दूसरी तरफ ये लोभांध व्यापारी भी मुझे सरलता से मेरा रस का तूंबा वापिस दें यह भी असंभव है। मुझे अभी बहुत दूर जाना है। अतः समय खोना भी ठीक नहीं है। मुझे अब अन्तिम उपाय का ही आश्रय लेना चाहिये। **"शठ प्रति शाठ्यं कूर्यात्"** "शठ के साथ शठता करना, धूर्तों के साथ धूर्त बनना, और सरल मनुष्यों के साथ सरलता का व्यवहार करना योग्य है" इस प्रकार विचार कर उसके पास जो स्तंभनकारी विद्या थी उस विद्या के प्रभाव से उस युवक ने दोनों भाइयों को स्तंभित कर दिया और अपने किये का फल पाओ! यह कह कर वह वहाँ से अन्यत्र चला गया।

क्रमशः

BOYD SMITHS PVT. LTD.
8, Netaji Subhas Road
B-3/5 Gillander House, Calcutta - 700 001
Ph: (O) 220-8105/2139, Resi : 329-0629/0319

NAHAR
5/1, A.J.C. Bose Road, Calcutta - 700 020
Ph: 247-6874, Resi : 244-3810

KUMAR CHANDRA SINGH DUDHORIA
7, Camac Street, Calcutta - 700 017
Phone : 282-5234/0329

ARIHANT JEWELLERS
Mahendra Singh Nahata
57, Burtalla Street, Calcutta - 700 007
Phone : 238-7015, 232-4087/4978

CREATIVE LIMITED
12, Dargah Road, Post Box : 16127, Cal - 17
Ph: (033) 240-3758/1690/3450/0514
Fax : (033) 240 0098, 2471833

KUMAR PAL BAHADUR SINGH DUGAR
2F, Garcha First Lane, Calcutta - 700 019
Phone : (O) 2378841
(R) 475-9712/2807

IN THE MEMORY OF PRABHAT NAHATA
PRADIP NAHATA
139/C/4 Anand Palit Road, Calcutta - 700 014
Phone : 2445839

IN THE MEMORY OF SOHANRAJ SINGHVI
VINAYMATI SINGHVI
13/4 Karaya Road, Calcutta - 700 019
Ph. : (O) 2208967, (R) 2471750

GAUTAM TRADING CORPORATION
32, Ezra Street, Calcutta - 700 001
6th Floor, Room No - 654
Phone : (O) 235 0623, (R) 239-6823

VEEKEY ELECTRONICS
36, Dhandevi Khanna Road
Calcutta - 700 054
Phone : 352-8940/334-4140 (R) 352-8387/9885

SUDERA ENTERPRISES PVT. LTD.
1, Shakespeare Sarani, Calcutta - 700 071
Phone : 282-7615/7617/2726
Gram : Sudera

N. K. JEWELLERS
Gold Jewellery & Silver Ware Dealers
2, Kali Krishna Tagore Street, Calcutta - 700 007

MAHASINGH RAI MEGH RAJ BAHADUR
Goal Para, Assam

TARUN TEXTILES (P) LTD.
203/1, Mahatma Gandhi Road, Calcutta - 700 007
Phone : 238-8677/1647, 239-6097

ELECTRO PLASTIC PRODUCTS (P) LTD.
22, Rabindra Sarani, Calcutta - 700 073
Phone : 236-3028, 237-4039

PRITAM ELECT. & ELECTRONICS PVT. LTD.
22, Rabindra Sarani, Shop No. G-136
Calcutta - 700 073, Ph: (033) 236-2210

IN THE MEMORY OF LATE
JITENDRA SINGH NAHAR
Rabindra Singh Nahar
40/4A, Chakraberia South, Calcutta - 700 020
Phone : (O) 244-1309, (R) 475-7458

SMT. ANGOORI DEVI SINGHI
'SINGHI PARK'
48/3 Gariahat Road, Calcutta - 700 019
Phone : 4642851/3511

SURAJ MAL TATER
C/o Surajmal Chandmal
137, Bipin Behari Ganguli Street
Calcutta - 700 012
Phone : Shop - 227-1857 (R) 238-0026

VISHESH AUTOMATIONS PVT. LTD.
Dealers of IBM, HCL-H.P. Seimens & Toshiba
16D, Ashutosh Mukherjee Road
Calcutta - 700 020, Phone : 476-2994, 455-0137
Fax : 91-33-4552151

MUSICAL FILMS (P) LTD.
9A, Explanade East
Calcutta - 700 069

PANKAJ NAHATA
Oswal Manufacturers Pvt. Ltd.
Manufacturers & Suppliers of Garments & Hosiery Labels
4, Jagmohan Mallick Lane, Calcutta - 700 007
Phone : (O) 238-4755, (R) 238-0817

APRAJITA
Air Conditioned Market
Calcutta - 700 071
Ph : 282-4649, Resi : 247-2670

P. C. JAIN
B-14, Sarvodaya Nagar, Kanpur - 208005
Ph: 29-5552/29-5955

MANI DHARI TAR UDYOG
Manufactureres of Flexible Ribbon,
Hookup, Main Cards, P.V.C. Insulated Wires and Cables.
THENWAR LAL JAIN
96, Old Roshan Pura, Najaf Garh
New Delhi - 110043, Ph. (O) 5016527
(R) 545 3415, 542 3304
Mobile : 9811075330,

ASHOKE KUMAR RAIDANI
6, Temple Street, Calcutta
Ph: 237 4132/236 2072

B. W. M. INTERNATIONAL
Manufacturers & Exporters
Peerkhanpur Road, Bhadohi-221401 (U.P.)
Ph : (O) 05414-25178, 25778, 25779
Bikaner Ph : 0151-522404, 25973
Fax: 05414-25378 (U.P.) 0151- 61256 (Bikaner)

C. H. SPINNING & WEAVING MILLS PVT. LTD.
Bothra ka Chowk, Gangasahar, Bikaner

SUDIP KUMAR SINGH DUDHORIA
Indian Silk House Agencies
129, Rasbehari Avenue
Calcutta, Phone : 464-1186

BALURGHAT TRANSPORT LTD.
170/2/C, Acharya Jagadish Bose Road
Calcutta, Phone : 284-0612-15
2, Ram Lochan Mallick Street
Calcutta - 700 073

A.C. LOCKS CO.
22 Bonfield Lane, Calcutta - 700 007

ROYAL TOUCH OVERSEAS CORPORATION
47, Pandit Purushottam Roy Street
2nd Floor, Calcutta -700 007
Ph: (033) 230-1329, 232-1033
Fax: 91-33-2302413

SURANA MOTORS PVT. LTD.
24A, Shakespeare Sarani
84 Parijat, 8th Floor, Calcutta - 700 071
Phone: 2477450/5264

UJJWAL TRADING PVT. LTD.
Regd Office :11, Clive Row
3rd Floor, Room no. 14
Cal -700 001, Ph: (O) 242-4131/4756

SAGAR MAL SURESH KUMAR
187, Rabindra Sarani
Calcutta - 700 007
Phone -Gaddy-233-1766/238-8846
Mobile : 98 3102 8566
Resi : 355-9641/7196

M/S. METROPOLITAN BOOK COMPANY
93, Park Street, Calcutta - 700 016
Ph: 226-2418, Resi : 464-2783

JAYSHREE EXPORTS
A Govt. of India Recognised Export House
105/4 Karaya Road, Calcutta - 700 017
Phone : 247-1810/1751, 240-6447
Fax : 91-33247-2897

MAHAVIR COKE INDUSTRIES (P) LTD.
1/1A Biplabi Anukul Chandra Street
Calcutta - 700 072
Ph : 215-1297, 236-4230/4240

ARBEITS INDIA
8/1, Middleton Road, 8th Floor, Room No. 4
Calcutta - 700 071, Ph: 2296256/8730/1029
Resi : 2476526/6638/2405126
Telex : 021 2333, ARBI IN, Fax : 226-0174

In the memory of—
HARAKH CHAND NAHATA
Lalit, Pradeep, Dilip Nahata
21, Anand Lok, August Kranti Marg
New Delhi - 110 049
Ph: Resi. 625-1065/7653/6089
Off : 338-1735/5923

LALCHAND DHARAMCHAND
Govt. Recognised Export House
12, India Exchange Place, Calcutta - 700 001
Ph: (B) 220-2074/8958 (D) 220-0983/3187
Cable : SWADHARMI, Fax : (033) 2209755
Resi : 464-3235/1541, Fax : (033) 4640547

GRAPHITE INDIA LIMITED
Pioneers in Carbon/Graphite Industry
31, Chowranghee Road, Calcutta -700016
Ph: 2264943, 292194, Fax: (033) 2457390

GRAPHIC PRINT & PACK
13A, Dacars Lane (Ground Floor) Calcutta-69
Phone : 248-1533, 248-0046

RATAN LAL DUNGARIA
16B, Ashutosh Mukherjee Road
Calcutta - 700 020, Ph: (R) 455-3586

GLOBE TRAVELS
Contact for better & Friendlier Service
11, Ho Chi Minh Sarani, Calcutta - 700 071
Phone : 282-8181

SURENDRA SINGH BOYED
Sovna Apartment
15/1 Chakrabaria Lane
Calcutta - 700 026
Phone : 476-1533

CALTRONIX
12, India Exchange Place
3rd Floor, Calcutta - 700 001
Phone : 220-1958/4110

MOTILAL BENGANI CHARITABLE TRUST
12 India Exchange Place
Calcutta - 700 001, Phone : 220-9255

Dr. ANJULA BINAYIKA
M.D. DND, M.R.C.O.G (London)
12, Prannath Pandit Street
Calcutta - 700 025, Phone : 474-8008

ABHANI BACHHRAJ
Fancy Saree Emporium
156, J. L. Bajaj Street, 1st Floor, Calcutta - 700 007
Ph : Shop- 238-6582, 239-0079
Resi- 483988/2573

APARAJITA BOYD
9/10, Sitanath Bose Lane, Salkia
Howrah - 711 106, Phone : 665-3666/2272

SMT. KUSUM KUMARI DOOGAR
166, Jodhpur Park, Calcutta -700068
Phone: 4720610

विशुद्ध केशर तथा मैसूर की सुगन्धित चन्दन की लकड़ी,
वरक एवं धूप के लिये पधारें
SHRI JAIN SWETAMBER SEVA SAMITI
13, Narayan Prasad Babu Lane
Calcutta - 700 007, Phone : 239-1408

SIDDHA NIKETAN
Golden Chance to book flat in Jaipur
8, Ho Chi Minh Sarani
Calcutta - 700 071, Ph : 282-2164/4577

AJAY DAGA, AJAY TRADERS
203/1 M.G. Road, Calcutta - 700 007
Phone : (O) 238-9356/0950
(Fact) 557-1697/7059

BALCHAND SOHANLAL
5, Karbala Mohammed Street
Calcutta - 700 001, Phone : 953902/252759
Fax : 033-252902

AKHILESH KUMAR JAIN
JUTE BROKER
9, India Exchange Place, Calcutta - 700 001
Phone : 221-4039, 210-2760, (R) : 660-1604

COMPUTER EXCHANGE
'Park Centre' 24 Park Street
Calcutta - 700 016, Phone : 229 5047, 9110

ACARDIA SHIPPING LTD.
22, Tulsiani Chambers
Nariman Point, Bombay - 400 021

NARENDRA JAIN
Super Iron Foundry
7, Rabindra Sarani, Calcutta - 700 001
Phone : 225-3785/0069
Works : 651-3144
Fax : 91-33-2250198, 943333, 954321
(Resi) 554 1289

SUNDERLAL DUGAR
R.D.B. Industries Ltd.
Regd. Off : Bikaner Building
8/1 Lal Bazaar Street, Calcutta - 700 001
Ph : 248-5146/6941/3350, Mobile : 9830032021
Office : Tobacco House
1/2, Old Court House Corner
Calcutta - 700 001, Ph : 220-2389/3570/3569

BHANWARLAL KARNAWAT
BEEKY TAI FEB UDYOG PVT. LTD.
City Centre, Room No. 534 & 535, 5th Floor
16, Synagauge Street, Calcutta - 700 001
Ph : 238-7281, 230-1739

ABHAY SINGH SURANA
Surana House
3, Mango Lane, Calcutta - 700 001
Phone : 248-1398/7282

VIJAY AJAY
9, India Exchange Place
Room No - 4/2, 4th Floor, Calcutta - 700 001
Phone : (O) 220-6974/8591/7126, 243-4318
Fax : 220 6974

KESARIA & CO.
Jute Tea Blenders & Packeteers Since 1921
2, Lal Bazar Street, Todi Chambers, 5th Floor
Calcutta - 700 001
Phone : (O) 248 8576/0669/1242
Resi - 225 5514, 237 8208, 229 1783

DHARAM CHAND SARAOGI SMRITI NYAS
'Jain House'
8/1 Esplanade East
Calcutta - 700 069

IN THE MEMORY OF VIJAY SINGH BADER
Ratan Bader, Sudarsan Bader
26, Indian Mirror Street
Calcutta - 700 013, Phone :

GYANI RAM HARAK CHAND SARAOGI CHARITABLE TRUST
P-8 Kalakar Street, Calcutta - 700 007
Phone : 239 6205/9727

ASHOK TRADING COMPANY
Authorised Distributors of
J.K. Engineering Steel Files & Drills I.T. Cuttings, Tools
Miranda Tools & (Hacksaw Blades) BIPICO-ECLIPSE
18C, Sukeas Lane, Calcutta - 700 001
Ph : 242-2345/4461

FORT GLOSTER INDUSTRIES
31 Chowranghee Road, Calcutta - 700 016
Ph : 2462289 (Direct), 2498243/44/45
2490846,2454242, 2469551
Resi- 4553632/4399, Fax : (91) 033-2495665
Gram : gloscab, E-mail : gloster ho @ sms
sprintrgg ems V.S.N.L. Net in

SPACE 'N' WINGS
Travel Agents
Domestic & International Airlines
Phone : 242-7806/8835/5852
10, Dr. Rajendra Prasad Sarani (Clive Row)
1st Floor, Calcutta - 700 001
Fax : 242 8831
P.S.A. Biman Bangladesh Airlines

D. K. SYNTHETICS
Whole Sale Dealer
180, Mahatma Gandhi Road
Mullick Kothi, 1st Floor, Calcutta - 700 007
Phone : Shop - 232-6040, (R) 684181

S. P. SYNTHETICS
House of Exclusive Shirtings
38 Armenian Street, 1st Floor, Calcutta - 700 001
Phone : 235 7312, Shop : 230 1180
Resi : 241 6831

H. R. ELECTRICALS
Dealers in Electrical Switch gear, starter & spare parts
Siemens, English Electric L.T/ L.K. B.C.H., etc.
32, Ezra Street, 7th Floor, Room No - 712A
South Block, Calcutta - 700 001
Room No - 314, 3rd Floor
Phone : (O) 2355009/1299, (R) 660-4332

BOTHRA & BOTHRA
12, Noormal Lohia Lane
2nd Floor, Calcutta - 700007
Phone : Shop 230 0216, (R) - 2359657/9312

CHUNNILAL ASHOK KUMAR
30, Cotton Street, 3rd Floor, Calcutta - 700 007
Phone : 2387764, (R)6664541, 5309286

MAUJIRAM PANNALAL
Citizen Umbrellas
45, Armenian Street, Calcutta-700 007
Ph : Shop-242-4483/9181, (O) 238-1396/1871
Fax : 231-2151/666-6013

SATKAR CONSTRUCTION PVT. LTD.
Gujrat Mansion, 5th Floor
14, Bentick Street, Calcutta-700 001
Ph : 248-4730/6256/9867, Direct : 248-6477/6169
Resi : 478-0765/458-3397, Mobile : 98300-30618
Fax : 248-6169

JAICHAND VINODKUMAR
Exclusive Wholesaler of Fancy Sarees
1/1, Noormal Lohia Lane, 2nd Floor, Calcutta-700 007
Phone : 238-3328/9678, 239-3450
Resi : 247-6785/7086, 40-0325/3995
Fax : 239-3450, 247-7526
Telex : 217761 JVS-IN Gram MINNI-BROS

BHEEKAM CHAND DEEP CHAND BHURA
D.C. Group Pvt. Ltd.
Sagar Estate, 5th Floor
2, Clive Ghat Street, Calcutta-700 001
Phone : 220-4779/0131/5721

जो हिंसात्मक प्रवृति से विलग है,
वही बुद्ध, ज्ञानी हैं
WITH BEST WISHES

S. VIJAY CHAND
Vinay Textiles
Whole Sale Merchants
113B Manohar Das Katra, Calcutta-700 007
Phone : Shop - 238-1388, (R) 247-6105/2750
'Guddi' 10, Jamunalal Bajaj Street
2nd Floor, Calcutta-700 007

LILY SUKHANI
7 Bright Appartment, Flat No- 7C
7 Bright Street, Calcutta - 700 019
Phone : 287 0448.

PARK PLACE HOTEL
'Singhi Villa'
49/2 Gariahat Road, Calcutta - 700 019
Phone : 475 9991/92/7632.

NAKODA METAL
Deals in all kinds of Aluminium
32A Brabourne Road
Calcutta - 700 001
Phone : 2352076, 2355701

THE GANGES MANUFACTURING COMPANY LIMITED
Chatterjee International Centre
33A, Jawaharlal Nehru Road,
6th Floor, Flat No. A-1
Calcutta-700 071

Gram "GANGJUTMIL"
Fax : + 91-33-245-7591
Telex : 021-2101 GANG IN

Phone : 226-0881
226-0883
226-6283
226-6953

Mill :

BANSBERIA
Dist : HOOGHLY
Pin-712 502
Phone : 6346441/6446442
Fax : 6346287

भागवत पुराण के अनुसार
ऋषभदेव जैन धर्म के संस्थापक हैं ।

Shri Radha Krishnan

卐

HINDUSTAN GAS & INDUSTRIES LTD.
ESSEL MINING & INDUSTRIES LTD.

Registered Office
"Industry House"
10, Camac Street, Calcutta - 700 017
Telegram : 'Hindogen' Calcutta
Phone : (033) 242-8399/8330/5443
Fax : (91) 33 2424998/4280

Manufacturers of
Engineers' Steel Files & Carbon Dioxide Gas
At Tangra (Calcutta)
IronOre and Manganese Ore Mines
In Orissa
S. G. Malleable & Heavy Duty Iron Castings
At Halol (Gujrat)
Ferro Vanadium and Ferro Molybdenum
At Vapi (Gujrat)
High Purity Nitrogen Gas
At Mangalore
H.D.P.E./P.P. Woven Sacks
At Jagdishpur (U.P.

जैन धर्म सर्वथा स्वतन्त्र धर्म है
यह किसी का अनुकरण नहीं है ।
Dr. Jacobi

卐

R. C. BOTHRA & COMPANY PVT. LTD

**Steams Agents, Handling Agents,
Commission Agents & Transport Contractors**

Regd. Office
2, Clive Ghat Street,, (N. C. Dutta Sarani)
Calcutta - 700 001
6th Floor, Room No. 6, Phone : 220-6702, 220-6400
Fax : (91) (33) 220-9333

Vizag Office
28-2-47 Daspalla Centre
Vishakhapatnam - 530020, Phone : 569208/563276
Fax : 91-0891-569326, Gram : BOTHRA

जैन मत तब से प्रचलित है
जबसे संसार में सृष्टि का आरम्भ हुआ ।
मुझे इसमें किसी प्रकार की आपत्ति नहीं है
कि जैन धर्म वैदान्तिक दर्शनों से पूर्व का है ।

Dr. Satish Chandra
Principal Sanksrit College, Calcutta

Estd. Quality Since 1940

BHANSALI

Quality. Innovation. Reliability

BHANSALI UDYOG PVT. LTD.

(Formerly : Laxman Singh Jariwala)

Balwant Jain- *Chairman*

A-42; Mayapuri, Phase-1, New Delhi-110064
Phone : 5144496, 5131086, 5132203
Fax : 91-011-5131184
E-mail : laxman.jariwala@gems.vsnl.net.in

"ऐसा विश्वास दिल में जमाते चलो
सिद्ध अरिहन्त को मन में रमाते चलो,
वक्त आयेगा ऐसा कभी न कभी
सिद्धि पायेंगे हम भी कभी न कभी ।"

KUSUM CHANACHUR

Founder : Late Sikhar Chand Churoria

Our Quality Product of Chanachur.

Anusandhan, Raja,
Rimghim, Picnic,
Subham, Bhaonagari Ghantia.

Manufactured By
M/s K. C. C. Food Product
Prop. Anil Kumar, Sunil Kumar Churoria
P.O. Azimganj, Pin - 742122
Dist : Murshidabad
Phone : Code : 03483 No. : 53232
Cal. Phone No. : 033 2300432, 5213863

With Best Compliments...

MARSON'S LTD

MARSON'S THE ONLY TRANSFORMER MANUFACTURER IN EASTERN INDIA EQUIPPED TO MANUFACTURE 132 KV CLASS TRANSFORMERS

Serving various SEB's Power station, Defence, Coal India, CESC, Railways, Projects Industries since 1957.

Transformers type tested both for Impulse/Short Circuit test for Proven design time and again.

PRODUCT RANGE

Manufactures of Power and Distribution Transformer from 25 KVA to 50 MVA upto 132kv level.

Current Transformer upto 66kv.

Dry type Transformer.

Unit auxiliary and stations service Transformers.

18, PALACE COURT
1, KYD STREET, CALCUTTA - 700 016
PHONE : 229-7346/4553/226-3236/4482
CABLE-ELENREP TLX-0214366 MEL-IN
FAX-00-9133-2259484/2263236

मानव जीवन नश्वर हैं उसमें भी आयु तो बहुत ही परिमित है

एकमात्र मोंक्ष मार्ग ही अविचल है यह जानकर

काम भोगो से निवृत हो जाना चाहिए।

*

G.C. Jain

A-40 N.D. S.E-11
New Delhi - 110049
Tel : 625-7095/0330

WB/NC-330
Vol. XXIII No. 8 TITTH AYARA November 1999
Registered with the Registered of Newspapers for India
under No. 30181/77

कोहो पीइं पणासेइ, माणी विणयनासणो।
माया मित्ताणि नासेइ, लोभो सव्वविणासणो।।

क्रोध प्रीति का नाश करता है,
मान विनय का नाश करता है,
माया मित्रता का नाश करती है,
और लोभ सभी सद्‌गुणों का नाश कर देता है।

Kamal Singh Rampuria
Rampuria Mansions
17/3 Mukhram Kanoria Road, Howrah
Phone No. : 666 7212/7225